

# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

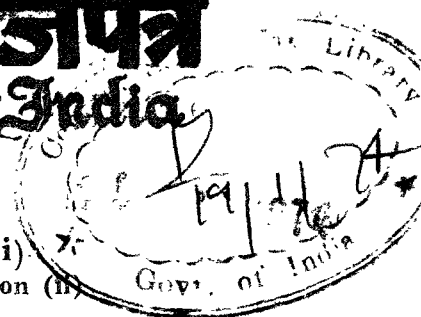
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY



सं० 442] नई दिल्ली, शुक्रवार, दिसम्बर 21, 1973/अग्रहायण 30, 1895

No. 442] NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 21, 1973/AGRAHAYANA 30, 1895

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

### NOTIFICATION

*New Delhi, the 21st December 1973*

**S.O. 790(E).**—In exercise of the powers conferred by section 114, read with sub-section (6) of section 27, of the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Gold Control (Licensing of Dealers) Rules, 1969, namely:—

1. (1) These rules may be called the Gold Control (Licensing of Dealers) Amendment Rules, 1973.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Gold Control (Licensing of Dealers) Rules, 1969 (hereinafter referred to as the said rules) after rule 2, the following rule shall be inserted, namely:—

**“2A. Exemption from certain provisions of rule 2.**—(1) Where an application under rule 2 is received by the Administrator from a person for the issue of a licence—

- (a) in an international transit lounge at an International Airport under the control of the International Airports Authority of India constituted under section 3 of the International Airports Authority Act, 1971 (43 of 1971); or
- (b) in a hotel recognised by the Department of Tourism of the Government of India in the Ministry of Tourism and Civil Aviation as a five star deluxe, five star, four star, or three star hotel; or
- (c) in any other place where in the opinion of the Administrator large number of foreign tourists are likely to stay the Administrator shall not have regard to the matters specified in clause (dd) and clause (f) of the said rule 2, if after making such inquiry as he may consider necessary he is satisfied that a licence may be issued to such person.

(2) In issuing a licence under sub-rule (1), the Administrator shall have regard to—

(a) the number of foreigners likely to—

(i) be in the international transit lounge, or

(ii) stay in the hotel or place, referred to in sub-rule (1);

(b) the sales of articles or ornaments, likely to be made to such foreigners against foreign currency;

(c) the amount of foreign exchange to be earned from the sales of articles or ornaments is not likely to be less than one lakh rupees per annum;

(d) the number of dealers existing in such international transit lounge, hotel or place;

(e) the demand for articles or ornaments which is likely to arise in such international transit lounge, hotel or place such demand being estimated on the basis of the turnover of the licensed dealers, existing therein, for a period of three years preceding the year in which such application for the issue of licence has been made and such turnover shall be determined on the basis of the accounts and returns submitted under the law for the time being in force in relation to gold.

(3) No licence under this rule shall be granted—

(a) in the case of the premises located in the international transit lounge, unless the applicant has been authorised to open a gold dealer's shop in such premises by the International Airports Authority of India referred to in sub-rule (1);

(b) in the case of the premises located in the hotel or other place referred to in sub-rule (1), unless the applicant, if he be not the owner thereof, has been authorised to open a gold dealer's shop in such premises by the management of such hotel, or by the person who is in charge of such other place, as the case may be.

(4) Where an applicant has been granted a licence under this rule, he shall sell articles or ornaments to foreigners only and only against payment in foreign currency.

(5) In this rule, "foreigner" has the meaning assigned to it in the Foreigners Act, 1946 (31 of 1946)."

3. In rule 3 of the said rules, after clause (g), the following clauses shall be inserted, namely:—

"(h) that the authorisation issued to the applicant, who has been granted a licence under rule 2A, to open a gold dealer's shop in the international transit lounge or hotel or other place, as the case may be, referred to in rule 2A, has not been withdrawn by the International Airports Authority of India constituted under section 3 of the International Airports Authority Act, 1971 (43 of 1971), or the management of the hotel or the person in charge of such place, as the case may be;

(i) that the turnover of the applicant, who has been granted a licence under rule 2A in the twelve months immediately preceding the date of application for renewal of the licence was not less than one lakh rupees."

[No. F.132/5/73-G.C.II]

M. A. RANGASWAMY, Jt. Secy.

वित्त मंत्रालय

(राजस्व और बीमा विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 21 दिसम्बर, 1973

का० खा० 790 (अ) केन्द्रीय सरकार, स्वर्ण (नियन्त्रण) अधिनियम, 1968 (1968 का 45) की धारा 27 की उपधारा (6) के साथ पठित धारा 114 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग

भारते हुए, स्वर्ण नियन्त्रण (व्यवहारियों का अनुज्ञापन) नियम, 1969 में और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनायी है, अर्थात् :—

1. (1) इन नियमों का नाम स्वर्ण नियन्त्रण (व्यवहारियों का अनुज्ञापन) संशोधन नियम, 1973 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. स्वर्ण नियन्त्रण (व्यवहारियों का अनुज्ञापन) नियम, 1969 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त नियम कहा गया है) में, नियम 2 के पश्चात् निम्नलिखित नियम अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“2क. नियम 2 कतिपय उपबन्धों से छूट—

(1) जहां अनुज्ञप्ति जारी करने के लिए प्रशासक द्वारा किसी व्यक्ति से नियम 2 के अधीन निम्न स्थानों पर कोई आवेदन प्राप्त होता है—

(क) अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकारी अधिनियम, 1971 (1971 का 43) की धारा 3 के अधीन गठित भारत के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकारी के नियन्त्राधीन किसी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा के किसी अन्तर्राष्ट्रीय संचरण विश्राम कक्ष में; या

(ख) भारत सरकार के पर्यटन और नागर विमानन मंत्रालय के पर्यटन विभाग द्वारा पांच सितारा डिलक्स, पांच सितारा, चार सितारा, या तीन सितारा होटल के रूप में मान्यताप्राप्त किसी होटल में; या

(ग) किसी ऐसे अन्य स्थान में, जहां, प्रशासक की राय में, बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटकों के ठहरने की संभावना हो,

वहां उक्त नियम 2 के खण्ड (घ) और खण्ड (च) में विनिर्दिष्ट बातों पर उन दशा में ध्यान नहीं देगा जब कि ऐसी जांच जो वह आवश्यक समझे, करने के पश्चात् उसका यह समाधान हो जाता है कि ऐसे व्यक्ति को अनुज्ञप्ति जारी की जा सकेगी।

(2) उप-नियम (1) के अधीन अनुज्ञप्ति जारी करते समय प्रशासक निम्नलिखित बातों पर ध्यान देगा—

(क) उप-नियम (1) में निर्देशित उन विदेशियों की संख्या के—

(i) अन्तर्राष्ट्रीय संचरण विश्राम कक्ष में रहने की संभावना है, या

(ii) किसी होटल या स्थान में ठहरने की संभावना है;

(ख) ऐसी वस्तुओं या आभूषणों के विक्रय, जो संभाव्यतः विदेशी मुद्रा के बदले में ऐसे विदेशियों को किए जाते हैं;

(ग) वस्तुओं या आभूषणों के विक्रयों से उपार्जित की जानेवाली विदेशी मुद्रा की रकम प्रति वर्ष संभाव्यतः एक लाख रुपये से कम नहीं है;

(घ) ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय संचरण विश्राम कक्ष, होटल या स्थान में विद्यमान व्यवहारियों की संख्या

(ङ) ऐसी वस्तुओं या आभूषणों की मांग जो संभाव्यतः ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय संचरण विश्राम कक्ष, होटल या स्थान में उत्पन्न होती है, ऐसी मांग का प्रावकलन

अनुज्ञप्त व्यवहारियों के व्यापारवर्त के आधार पर किया जाएगा जो कि उस वर्ष के जिसमें अनुज्ञप्ति जारी करने के लिए ऐसा आवेदन किया गया है, पूर्ववर्ती तीन वर्षों की अवधि के लिए विद्यमान हो और ऐसे व्यापारवर्त का अवधारण स्वर्ण से सम्बन्धित तत्समय प्रवत विधि के अधीन दिए गए लेखा और विवरणों के आधार पर किया जाएगा ।

(3) इस नियम के अधीन, —

- (क) अन्तर्राष्ट्रीय संक्रमण विश्राम कक्ष में अवस्थित परिसरों की दशा में तब तक कोई अनुज्ञप्ति नहीं दी जाएगी, जब तक कि उप-नियम (1) में निश्चित भारत के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकारी द्वारा ऐसे परिसरों में ऐसे आवेदक को स्वर्ण व्यवहारी की दुकान खोलने के लिए प्राधिकृत न किया गया हो ;
- (ख) उप-नियम (1) में निर्देशित किसी होटल या अन्य स्थान में अवस्थित परिसरों की दशा में कोई अनुज्ञप्ति तब तक नहीं दी जाएगी तब तक कि आवेदक को यदि वह स्वयं उसका स्वामी नहीं है, यथास्थिति ऐसे होटल के प्रबन्धक द्वारा या ऐसे व्यक्ति द्वारा जो ऐसे अन्य स्थान का भारसाधक है, ऐसे परिसरों में स्वर्ण व्यवहारी की दुकान खोलने के लिए प्राधिकृत न किया गया हो ।
- (4) तब किसी आवेदक को इन नियम के अधीन अनुज्ञप्ति दे दी गई हो, वहाँ वह ऐसी वस्तुओं या प्राप्तिपणों का विक्रय केवल विदेशियों को विदेशी मु.ा दिए जाने पर ही करेगा ।
- (5) इस नियम में “विदेशी” शब्द का वही अर्थ है जोकि उसे विदेशी अधिनियम, 1946 (1946 का 31) में समनुदिष्ट किया गया है ।”

3. उक्त नियमों के नियम 3 में खण्ड (घ) के पश्चात् निम्नलिखित खण्ड अन्तःस्थापित किए जाएंगे, अर्थात् :—

- “(ज) ऐसे आवेदक को जिसे नियम 2क में निर्देशित यथास्थिति अन्तर्राष्ट्रीय संक्रमण विश्राम कक्ष या होटल या अन्य स्थान में स्वर्ण व्यवहारी की दुकान खोलने के लिए नियम 2क के अधीन अनुज्ञप्ति दी गई है, जारी किया गया प्राधिकार अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकारी अधिनियम, 1971 (1971 का 43) की धारा 3 के अधीन गठित यथास्थिति भारत के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकारी या होटल के प्रबन्धक या ऐसे स्थान के भारसाधक व्यक्ति द्वारा वापस न ले लिया गया है ;
- (झ) ऐसे आवेदक को जिसे नियम 2क के अधीन अनुज्ञप्ति दे दी गई है, अनुज्ञप्ति के नवीकरण के आवेदन की तारीख से ठीक पूर्व 12 मास का व्यापारवर्त एक लाख रुपये से कम न था ।”

[सं० एफ० 132/5/73—जी०सी० II]

एम० ए० रंगास्वामी, संयुक्त सचिव ।